MAH/NAN/10936/2015
ISSN : 2454-7905
SJIF 2023 - Impact Factor : 8.024

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

(A Peer Reviewed)

Year - 8, Vol. III, Issue- LXXVIII, 17 Feb. 2023

India from a Global Perspective

Editor
Mr. P. M. Ingle

Chief Editor
Dr. Vasant Biradar

Quartly Research Journal

(Arts - Humanities - Social Sciences - Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering, Medical, Ayurveda, Pharmaceutical, Journalism, Mass Communication, Library Science Faculty's)

SIDDHI
PUBLICATION

सिद्धी प्रकाशन

श्रीनगर, नांदेड.

येथे सर्व प्रकारची पुस्तके, नियतकालिके व मासिके प्रकाशित केली जातील.
पुस्तकांसाठी ISBN नंबर उपलब्ध.

संपर्क : डॉ. राजेश गंगाधरराव उंबरकर, सौ.पल्लवी लक्ष्मण शेटे मो. 9623979067

OUR SERVICES

- ISBN Book
- Call for paper
- International Research Journal
- Ph.D. & M.Phil Thesis Book
- E-Book
- Conference and Seminar Proceeding
- Educational Videos and Notes
- Educational Activities

G Pay PhonePe BHIM BHARAT INTERFACE FOR MONEY 9623979067

SIDDHI
Siddhi Prakashan
Nanded.

Worldwide International Inter
Disciplinary Research Journal

Website : www.wiidrj.com
C/o. R.G. Umbarkar, H.No. 624, Bela Nagar, Near Maroti Mandir,
Taroda Kh. Nanded - 431 605 Maharashtra (India)
Email : umbarkar.rajesh@yahoo.com
shrishprakashan2009@gmail.com
Mob : +91-9623979067

ISSN 2454-7905
9 772454 790004 >

ISSN: 2454 – 7905

SJIF Impact Factor: 8 . 024

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

A Peer Reviewed Referred Journal

Quarterly Research Journal

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering, Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

www.wiidrj.com

Vol. III ISSUE – LXXVIII Year – 8 17 Feb. 2023

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded.

And

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Udgir's

Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur Dist. Latur. (M.S.) 413515

NAAC Accredited 'B' Grade Web: www.mpmahmedpur.in

Dept. of Library

One Day Multi-Disciplinary International Conference 17 Feb. 2023

"India from a Global Perspective"

वैश्विक परिदृषातून भारत (वैश्विक दृष्टिकोन से भारत)

:: Chief Editor ::

Principal Dr. Vasant Biradar

Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur.

:: Editor ::

Mr. P. M. Ingle

Librarian

Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur.

46.	कवी अविनाश पाटील यांच्या "अनवट वाटा" कवितासंग्रहातील जागतिक दृष्टिकोन	डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे	185
47.	जागतिकीकरणाच्या दृष्टीकोणातून बुध्द तत्वज्ञानाचे योगदान	प्रा. डॉ. बालाजी मारूती गव्हाळे	197
48.	बौद्ध तत्त्वज्ञान आणि भारत	प्रा. डॉ. सारिका विष्णू केदार	203
49.	वैदिक साहित्यात विश्वबंधुत्व	प्रा अभय सखाराम पाटील	207
50.	भारतीय नाटकों की उत्पत्ति एवं महत्त्व	अनंत कुलकर्णी	210
51.	संस्कृतभाषा और संस्कृति का संबंध	बिरादार किशोर ज्ञानोबा	212
52.	संस्कृत साहित्यका वैश्विक महत्त्व	प्रा. शंकर धारबा घाडगे	215
53.	आप: सर्वस्य भेषजी:।	डॉ. गणंजय यज्ञेश्वरराव कहाळेकर	218
54.	संस्कृत साहित्याचे जगभरात अनुवाद	डॉ. प्रशांत बिरादार	221
55.	पर्यावरण-प्रदूषण एवं वैदिक वाङ्मय	डॉ. अखिलेश अ. शर्मा	223
56.	भारतीय विचारधारा में मन संकल्पना	विनय व्यंकट गायकवाड	227
57.	वैश्विक परिदृश्यातून 'भराड' विधीनाट्याचे वेगळेपण	सुळे अरविंद काशिनाथराव प्रो.डॉ. बी.आर. दहिफळे	230
58.	"वैश्विक परिदृश्यातून भटक्या जमातींच्या आत्मकथनातील शैक्षणिक संघर्ष"	प्रा. डॉ. संजय किशनराव हापगुंडे	233
59.	वैश्वीकरण के दौरमें गांधीजी के शैक्षिक विचारोंकी प्रासंगीकता	डॉ. दयानंद सालुंके	237
60.	"स्त्री पारतंत्र्याचा तुरुंग उध्ववस्त करणाऱ्या : स्त्रीमुक्तीच्या युद्धगाथा"	डॉ. संजय कसाब	239

भारतीय विचारधारा में मन संकल्पना

विनय व्यंकट गायकवाड
संशोधक, संशोधन केंद्र- संस्कृत प्रगत अध्ययन केंद्र,सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे.

१प्रस्तावना-

मानव समाज का निर्माण मनुष्यों से होता है, तो मनुष्यों का उन के तन और मन से। आधुनिक वैज्ञानिकों ने ही नहीं, प्राचीन यूनानी दार्शनिकों ने भी मनुष्यों को इन्ही दो तत्त्वों से निर्मित माना है[1]। मनुष्य का प्रत्येक कार्य शरीर द्वारा सम्पादित होता है। लेकिन कार्य सम्पादन की प्रेरणा उसे मन से ही मिलती है। उसका प्रत्येक कार्य उसके चेतन या अवचेतन मन का परिणाम है। उस के आचार व्यवहार में उसका मन ही अभिव्यक्ति पाता है। अतः मनुष्य वही है, जो उस का मन है। अनियन्त्रित एवं स्वच्छन्द मन मानव को पतन की ओर ले जाता है अतः मन संस्कार्य है। मन के अन्दर ही मन को संयमित नियमित करने की क्षमताएं निहित है। गीता में इसी को परिष्कृत रूप में मन की अध्यात्म संज्ञा दी गई है[2]। मन के संस्कार परिष्कार के प्रयास आदिकाल से ही होते रहे है। वेद, पुराण, साहित्य, ललित कलाएँ इस के प्रत्यक्षप्रमाण है।

भारतीय दर्शन में मन को अन्तःकरण की संज्ञा दी गई है। वस्तुतः भारतीय दर्शन व्यापक रूप में मन को अनुभव, प्रत्यक्ष, ज्ञान, विवेक-बोध, इच्छादि की क्षमताओं से युक्त मानता है। पाश्चात्य विचारकों ने भी मन के सम्बन्ध में ठीक एसा ही मत प्रस्तुत किया है। यद्यपि मन अन्तःकरण की ही एक क्षमता या उस का एक अङ्ग है तथापि भारतीय दर्शन शास्त्र में इस का प्रयोग समूचे अन्तःकरण के अर्थ में भी हुआ है। इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि भारत में मनोविज्ञान पश्चिम की भाति एक स्वतन्त्र विषय के रूप में न होकर दर्शन का विषय रहा है। यह तथ्य इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि मन को कही ब्रह्म[3] की संज्ञा दी गई है तो कही आत्मा[4] की। वही एक स्थान पर कहा गया है कि काम, संकल्प, संशय, श्रद्धा, अश्रद्धा, धृति, लज्जा, बुद्धि और भय ये सब मन ही है[5]। भारतीय दर्शन में अन्य दर्शनों की अपेक्षा योगदर्शन में इस विषय का अधिक वर्णन किया गया है। योगवाशिष्ठ दर्शन का नाभि भी कह सकते है।[6] क्यो कि योगवाशिष्ठ दर्शन के अध्ययन से ऐसा अनुभव होता है कि सभी विचारों का मूल मन है। योगवाशिष्ठ के अनुसार संसार की सभी वस्तुएँ, सभी विचार तथा सारा प्रपञ्च मन की लीला मात्र से निर्मित है।[7]श्रीमद्भागवत् गीता में मन के स्वभाव का वर्णन करते हुए उसे अत्यन्तचञ्चल, प्रथमशील, बलवान, दृढ एवं वायु के समान अग्राह्य बताया गया है।[8] मन का क्रमिक उदय सृष्टि का विकास है और मन का क्रमिक अस्त सृष्टि का विनाश है। मन की पवित्रता से ही स्वातन्त्र्य तथा मन की अपवित्रता से ही बन्धन होता है। मन की परिस्थिति पर ही हमारे सभी आधिभौतिक और आध्यात्मिक विचार निर्भर करते हैं।

योगवाशिष्ठ मन को सर्वशक्तिमान् विराट् मन का एक निश्चित रूप मानता है, जो कि उस की इच्छानुसार उत्पन्न होता है। मन शुद्ध चेतना का स्फुरण मात्र है, जो किसी विषय के सम्पर्क से मलिन तथा परिवर्तित होता रहता है। यह चेतना का परिवर्तनशील तथा परिस्पन्दनशील रूप है, जो ज्ञान और कर्म के सम्पर्क में आता रहता है।[9] वाशिष्ठ के अनुसार बाह्य और आभ्यान्तर जगत् की विविधता मन के विभिन्न रूपों के अतिरिक्त और कुछ नही है। उन के अनुसार नट की भांति मन अपने कार्यों के अनुसार भिन्न भिन्न नामों से पहचाना जाता है, जिस प्रकार रंगभूमि में

---

[1] Encyclopedia of Britannica, Page. 149.
[2] स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। (श्रीम.भा.गी. पृ.13)
[3] मनौ वै ब्रह्म। (बृहदारण्यकोपनिषद्. 4.1.6.)
[4] मन एवास्यात्मा। (बृहदारण्यकोपनिषद्. 1.4.17न.)
[5] (बृहदारण्यकोपनिषद्. 1.5.3.)
[6] चित्तं नाभि किलस्येह मायाचक्रस्य सर्वतः। (यो.वा)
[7] मनो मननिर्माणमात्रमेतत् जगत् त्रयम्। (यो.वा.4.9.23)
[8] श्री.म.भा.गी. 6.34
[9] अनन्तस्यात्मतत्त्वस्य सर्वशक्तेर्महात्मनः। सङ्कल्पशक्तिरचितं यद्रूपं तन्मनो विदुः।। (यो. वा.)

नट वेश बदलने पर राजा, भिक्षुक, गन्धर्वादि विभिन्न नामों से वेषों के अनुसार पुकारा जाता है। तात्पर्य यह है कि मन एक ही है परन्तु कर्म के अनुसार मन, बुद्धि, चित्त इस के विभिन्न नाम है।

मन सङ्ख्या में असङ्ख्य है, तथापि प्रत्येक प्राणी में एक ही मन की संख्या नियत की गई है। योग वाशिष्ठ के अनुसार संसार में जीव या मन की संख्या की कोई सीमा नहीं है। यह विश्व जीव या मन से परिव्याप्त है। विराट मन से लाखों या करोडों की संख्या में मन निकलते है, जिस प्रकार जलप्रपात से असंख्य जलबूंदो की उत्पत्ति होती है और जल के बुलबुले के समान प्रत्येक दिशा में प्रत्येक स्थल पर असंख्य मन उत्पन्न और विनष्ट होते रहते है।

२.वैदिक संहिताओं में मनः-

ऋग्वेद में मनस् और हृद् (हृदय) शब्दों का अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है। मरुद्गण, अश्विनौ तथा उन के रथ की गति को मन के समान तीव्र बताया गया है[10]। इन्द्र को मनस्वान् कहा गया है।[11] वरुण वैसे तो ऋतुओं का नियमन करता है, लेकिन उसे नैतिक नियमों का भी पालक कहा गया है। समूचे "संज्ञानम् सूक्त" में समाज के सभी व्यक्तियों की क्रियाओं, गति, चिन्तन, मनन, मन और बुद्धि के पूर्ण सहयोग व सामञ्जस्य की प्रेरणा दी गई है। अरविन्द घोष ने भी मन को दिव्यमन का प्रतीक माना है[12]।

ऋग्वेद में काम, इच्छा, मन्यु, क्रोध, घी, धीर, विचारशील, सुमृता, उदारता, श्रद्धा, अनुमति, कृपा, माया, रहस्यमयी शक्ति, सुम्न, सदाशयता, सुमेधा तथा शम जैसे अनेक मनोवैज्ञानिक शब्द आए है। जो सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक भावों के प्रतीत है।[13]मन शब्द ईर्ष्या, मनायु आकांक्षा तथा मनावतु इच्छा के आशय से ग्रहण किया गया है[14]।

३.भारतीय मनोविज्ञान का विकासः-

मनोविज्ञान उतना ही प्राचीन है जितनी कि मनुष्य के आत्मसजग मन जिज्ञासा वृत्ति। जब से मनुष्य ने अपने स्वरूप व जीवन के बारे में सोचना प्रारम्भ किया, तभी से उस का ध्यान मन और आत्मा की ओर गया[15]। यद्यपि मन के अध्ययन व स्वरूप की जानकारी का श्रेय पश्चिम को जाता है, लेकिन भारतीय मनीषियों द्वारा मन, उस की प्रवृत्तियों एवं चेष्टाओं सम्बन्धी गम्भीर विवेचन को पश्चिम ने भी स्वीकारा है।

४. वैदिक संहिताओं में मनः-

ऋग्वेद में मनस् और हृद् (हृदय) शब्दों का अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है। मरुद्गण, अश्विनौ तथा उन के रथ की गति को मन के समान तीव्र बताया गया है[16]। इन्द्र को मनस्वान् कहा गया है[17]। वरुण वैसे तो ऋतुओं का नियमन करता है, लेकिन उसे नैतिक नियमों का भी पालक कहा गया है। समूचे सञ्ज्ञानम् सूक्त में समाज के सभी व्यक्तियों की क्रियाओ, गति, चिन्तन, मनन, मन और बुद्धि के पूर्ण सहयोग व सामञ्जस्य की प्रेरणा दी गई है। अरविन्द घोष ने भी मन को दिव्यमन का प्रतीक माना है[18]। वाजसनेयी संहिता के 'शिव संकल्प सूक्त' का आधार पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है। मन बहुत चलता है। समय व स्थान के बन्धन से वह मुक्त है। जागृत और सुषुप्तावस्था में मन की इसी गतिशीलता की ओर पहले ही मन्त्र में संकेत किया गया है[19]।

५. उपनिषदों में मनः-

उपनिषदों में मानव व्यक्तित्व के विविध तत्त्वों शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि और आत्मा का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चिन्तन मिलता है। कठोपनिषद् में एक रूपक के माध्यम से इन का पारस्परिक सम्बन्ध दर्शाया गया है। आत्मा को रथ का स्वामी, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि, मन को लगाम, इन्द्रियों को घोडे तथा सांसारिक विषय भोगों को

---

[10]ऋग्वेद. १०.४०.०७, १०.१२९.४, ७.१००.७, ८.१००.५.

[11]यो जात एव प्रथमो मनस्वान्। (ऋग्वेद.२.१२.१)

[12]यन्मनः स इन्द्रः। (गोपथ ब्राह्मण. उत्तरार्द्ध. ४.१२)

[13]ऋग्वेद. १०.९५.६, ८.४८.१., १०.१५.४.

[14] रामकुमार राय, वैदिक-इन्डैक्स (भाग.०२) पृ. १४४.

[15]डा. सीताराम जायसवाल, मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा. पृ.10

[16]ऋग्वेद. २.२८.५, १०.१९१-१४

[17]यो जात एव प्रथमो मनस्वान्। (ऋग्वेद. २.१२.१)

[18] यन्मनः स इन्द्रः। (गोपथब्राह्मण ४.१२)

[19]यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति। दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु। (यजुर्वेद. वाजसनेयी. संहिता. ३४.१)

घोडों के विचरने का मार्ग बताया गया है।[20]एक अन्य स्थान पर इन्द्रियों से विषयों को विषयों से मन को, मन से बुद्धि को तथा बुद्धि से आत्मा को प्रबल माना गया है। उपनिषदों में मन का विशद एवं सूक्ष्म विवेचन हुआ है। वहां मन को ब्रह्म व प्रज्ञानम् की संज्ञा दी गई है[21]।

६. मन का लक्षणः-

'मन् ज्ञाने' धातु से निष्पन्न शब्द के लक्षण के विषय में कहा जा सकता है कि ज्ञान का होना अथवा न होना ही मन के अस्तित्व का लक्षण है। चरक शास्त्र में मन का लक्षण बताते हुए कहा गया है कि आत्मा को श्रोत्रादि इन्द्रियों तथा शब्दादि विषयों से सम्बन्ध होते हुए भी कभी ज्ञान का होना कभी ज्ञान का न होना करणान्तर को सूचित करते है। और यह करणान्तर मन है[22]। यह करणान्तर जब इन्द्रियों से संयुक्त होता है, तो इन्द्रियां अपने अर्थो का ग्रहण करने में समर्थ होती है। अर्थात् मन सान्निध्य से ज्ञान होता है और असान्निध्य से ज्ञान नही होता यह तो नित्य का अनुभव है कि जब हमारा चित्त किसी गम्भीर विचार में मग्न रहता है, तब पास रखी हुई घडी का ठिक-ठिक शब्द सुनाई नही देता और न इस बात का ज्ञान ही होता है कि सामने से गुजरता हुआ व्यक्ति कौन है?

कहने का भाव यह है कि आत्मा, मन तथा अर्थ का परस्पर सम्बन्ध होने पर ही ज्ञान होता है। इस लिए कहा जाता है कि 'अन्यत्रमना अभूवं नाश्रोषम्' अर्थात् मेरा मन अन्य विषय में लगा हुआ था इसलिए आप के वचनों को नही सुना। इस प्रकार का बृहदारण्यकोपनिषद् में भी मिलता है[23]। इस लिए चरक शास्त्र में कहा गया है कि मन से सम्बद्ध होने पर ही इन्द्रियां अपने-अपने अर्थो का ग्रहण करने में समर्थ है[24] मन की क्रिया भी विषय का ज्ञान कराने के लिए आवश्यक है और मन इन्द्रियों की चेष्टा में कारण है। महाभारत के शान्तिपर्व में भी इसी प्रकार के तथ्य को व्यक्त किया गया है।[25] इन सब उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है कि आत्मा का सब इन्दियों के साथ सम्बन्ध होने पर भी एक ही काल में एक ही विषय का ज्ञान होना तथा दूसरे विषय का ज्ञान न होना मन की सिद्धि में लिङ्ग है।

७. विषय की ज्ञान प्रक्रियाः-

अब प्रश्न उठता है कि मन किस प्रकार बाह्य विषय का ज्ञान कराने में समर्थ है? इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए आचार्यों का कथन है कि आत्मा व मन, शरीर रूपी गढ के अन्दर है। आत्मा का सम्बन्ध मन से रहता है और मन का इन्द्रियों से और इन्द्रियों का विषयों से सम्बन्ध रहता है[26]। मन ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा इन्हे प्रेरित करता है। उस की प्रेरणा के अनुसार इन में से कोई अपने विषय से सम्बन्ध कर उस की विशेषता की सूचना उसी मार्ग से मन को देता है और मन के द्वारा आत्मा को उस विषय का ज्ञान होता है। यदि उस ज्ञान पर विशेष अवधान दिया हो तो उस के कुछ अंकन चित्र चित्र पर अङ्कित हो जाते है।

उस प्रकार आत्मा जब किसी बाहर के विषय को जानने की इच्छा करता है। वह अपनी इच्छाशक्ति से अपने मन के अन्दर उस विषय की ओर बहने वाली विचार तरंग उत्पन्न करता है। वह विचार तरंग उन ज्ञान तन्तुओं में से बहती हुई उस इन्द्रिय के केन्द्र बिन्दु से जा टकराती है जिस का यह विषय है। विषय से सम्बद्ध होते ही आत्मा की प्रेरणा के आधार पर ही विषय के स्वरूप को साथ लिए हुए तरंग उसी मार्ग से अन्दर लौट आती है और आत्मा उस विषय को जानने में समर्थ हो जाता है।

कहने का तात्पर्य यही है कि मन को अधिकृत्य अनेक प्रकार से विचार भारतीय परंपरा में किया गया है। इसी के साथ साथ मन के विषय, मन की वृत्तियां, मन का इन्द्रियत्व और भौतिकत्व, मन का अधिष्ठान आदि विषयों का भी विचार किया गया है।

---

[20]आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।३।।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयां स्तेषु गोचरान्। आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।४।। (कठोपनिषद्. वल्ली. ३. श्लो.३,४)

[21]मनो वै ब्रह्मेति। (बृहदारण्यकोपनिषद् ४.१.६, तैत्तिरीयोपनिषद् ३.४)
प्रज्ञाप्रतिष्ठा प्रज्ञानम् ब्रह्म। (ऐतरेयोपनिषद् ३.२)

[22]लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव च। सति ह्यात्म इन्द्रियार्थानाम् सन्निकर्षेन वर्तते।।
वैकृत्यान्मनसो ज्ञानं सान्निध्यात्तच्च वर्तते। (चरकशास्त्र. I)

[23]अन्यत्र मनाभूवं नादर्शम् अन्यत्र मनाभूवं नाश्रौषमिति, मनसा ह्येष पश्यति मनसा शृणोति। (बृहदारण्यकोपनिषद्. पृ.४५)

[24]मनः पुरःसराणि इन्द्रियाण्यर्थग्रहणसमर्थानि भवन्ति। तत् अर्थात्मसम्पदायत्तचेष्टचेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम्। (चरकसूत्र. ८)

[25]चक्षुः पश्यति रूपाणि मनसा न च चक्षुषा। मनसा व्याकुले चक्षुः पश्यन्नपि न पश्यति। न चेन्द्रियाणि सर्वाणि पश्यन्ति इत्यभिचक्षते। न चेन्द्रियाणि पश्यन्ति मन एवात्र पश्यति। (महाभारत शान्तिपर्व)

[26]आत्मा मनसा संयुज्यते मन इन्द्रियेण इन्द्रियमर्थेन ततो ज्ञानम्। (न्यायभाष्य. पृ.३८)